रात्रिक्लास 19/4/68 ओमशान्ति बाप और वर्सा याद है?

तुम बच्चे भी खिवैय्या हो। उस पार जाने का रास्ता बताते हो। ज्ञान सुनाते हो। है बहुत सहज। उस पार अर्थात् कलयुग से सतयुग में। बीच में क्रॉस करना पड़ता है शान्तिधाम। जैसे बाप खिवैय्या बागवान, माली है वैसे तुम बच्चे भी हो। बाप में तो सफीयतें हैं, उनके पास तो है ही है। कोई से मिलती नहीं है। तुमको आकर क्वालिफिकेशन सिखलाते हैं। इस समय ही क्वालिफिकेशन छी–2 है। जो–जो मिनिस्टर जिन–2 बातों को लिए मुकर्रर हैं उनकी लिस्ट निकालो। फिर तुम बेहद की बातें सुना सकते हो। हेल्थ मिनिस्टर, फूड मिनिस्टर आदि जो भी लिस्ट निकालो फिर समझाओ हम बेहद के हैं। तो तुम चिट्ठी लिख सकते हो। बाप हमार(रे) में सभी सफीयतें भरते हैं। एक ही जीवन हम ऐसी बनाते हैं हेल्थ, वेल्थ, गुण भी सुधारते हैं। एड्युकेशन भी है, जेल से भी छुड़ाते हैं आधा कल्प लिए। तुम बच्चों में बहुत सफीयतें भरी जातीं हैं। बाप सभी बातें समझाते हैं। म्युज़ियम में भल आते तो बहुत हैं; परंतु जितना सॉल्ड काम करना चाहिए वह अजन बच्चों में बल नहीं है। याद की यात्रा ही कम है, नहीं तो सभी मिनिस्टर्स आदि आते हैं, बल हो तो उनको पकड़े। ज़मीन के मिनिस्टर्स भी आते हैं। बोलो भगवान के बच्चे को ज़मीन देकर फिर बदलते हो। हम खुदाई खिज़मतगार हैं। उनकी चीज़ हप करते हो गोया खुदा के चीज़ को हाथ लगाते हो, विघ्न डालते हो। हम ईश्वर को मदद करते हैं, तुम इसमें विघ्न डालते हो। एक–2 को ऐसा समझाना चाहिए जो उनको पानी कर देना चाहिए। हम भारत की सेवा में सभी पैसे लगाते हैं। दो शब्दों से भी पानी कर सकते हो। तुम्हारा ज्ञान बहुत मीठा है। प्रेम से बैठ सुनते हैं तो प्रेम के आँसू आ जाते हैं। भाई के ख़्याल से देखो। भाई को रास्ता बताती हूँ तो पानी हो जाये। अभी तक मिनिस्टर आदि को पानी नहीं कर सकते हैं। देहली में है एक म्युज़ियम। देखकर फिर औरों को दिखाते हैं। पूछते हैं मिसेज़ गांधी को नहीं दिखाया है? उनको भी पानी कर देना चाहिए। हम भारत को तमोप्रधान से सतोप्रधान श्रेष्ठाचारी बना रहे हैं श्रीमत पर। गीता को तो वह जानती नहीं; परन्तु सुनाना ऐसा चाहिए जो पानी हो जाये। पूछते हैं भारत की क्या सर्विस कर रहे हो? बोलो, हम श्रीमत पर सच्ची सेवा कर रहे हैं। तुम रावण मत पर डिससर्विस करते हो। एकदम पानी कर देना चाहिए। आते बहुत हैं, रिज़ल्ट कुछ नहीं। बाबा कहते थे देहली में घेराव डालो। बड़े–2 मनुष्य आये; परन्तु ऐसा किसको घायल करते नहीं हैं; इसलिए बाबा समझते हैं अभी देरी है। घायल करने जैसा बनने में योगबल चाहिए। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। साथ–2 ज्ञान भी है। जानते हैं भारत हेवेन था; परन्तु कैसे बनी यह नहीं जानते। योग के लिए ही सन्यासियों को पकड़ लेते हैं। तुम्हारा योग हो तो कशिश कर सको। अभी तक देह अभिमान है। अच्छे–2 बच्चे भाषण करने वाले हैं; परन्तु (व)ह कशिश कम है। नशा चढ़ जाता है। धन का नशा बहुत है। मुख्य बात है ही योग की। योग से तुम अपने को पवित्र बनाते हो। धनवान तो ढेर हैं। क्या काम के? तुम बच्चों में योगबल चाहिए। बहुत कमी है। इस घड़ी तक जो कल्प पहले ड्रामा में चला है वही होता है। जो रूसते करते हैं अपन को ही घाटा डालते हैं। तुम अन्दर में खुशी में पैरों पर नाच करते हो। यह खुशी का डांस है ना। ज्ञान–योग से अन्दर में तुम्हारी डांस होती है। डांस करने–कराने का भी शौक होना चाहिए। झुटका खाते रहेंगे तो डांस करने वाले को भी नफ़रत आवेगी। सबेरे बाप आकर दृष्टि देते हैं। आँख बंद कर बैठे होंगे तो क्या मिलेगा? आँख खोलकर बैठना चाहिए। आँखें खोल देखते–2 तुम अशरीरी भी बन जाते हो। ज्ञान से अशरीर होना होता है। गुम होने की बात नहीं। अभी हमको अपने घर अपनी राजाई में जाना है। यह ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। ऐसे नहीं शरीर भूल जावे। कर्मातीत अवस्था में पहुँचने में टाइम है। सो भी बुद्धि में ज्ञान है अभी जाना है घर। वह छोड़ना है। बाप ने विनाश, स्थापना भी दिखाया। यह दुनिया मरी पड़ी है। हम नई दुनिया के लायक बन रहे हैं। योग से ही कर्मातीत अवस्था होगी। अभी जाना है घर; इसलिए शरीर में भी कोई ममत्व नहीं। यह अवस्था भी आवेगी। अभी कर्मातीत अवस्था हो जाये तो कहां जाकर ठहरेंगे? बाबा के पास भी कितना ठहरेंगे? टाइम पड़ा है ना।

तो जाकर जन्म लेते हैं। इन बातों में अपना फालतू टाइम गंवाना न चाहिए। दूसरा गया, न गया, बाबा के पास बैठा या राजा के पास जन्म लिया इसमें हमारा क्या जाता है? हरेक को अपना पुरुषार्थ करना है। वह भी टाइम वेस्ट हो जाता है। हम कैसे बाबा को याद करें? यह सभी ख़त्म होना है। शरीर छूट जावेंगे, हम चले जावेंगे। इस दुनियां से उपराम रहना है। घर को और राजाई को याद करना है। कोई मरा उसमें हमारा क्या जाता? कोई भी चीज़ में आसक्ति नहीं। आगे चल देखेंगे विनाश बहुत कड़ा है। विनाश होगा तो तुमको खुशी होगी हम ट्रांसफर हुये कि हुये। पुरानी दुनियां की कोई भी चीज़ याद आई तो फेल। जिन बच्चों को कुछ है ही नहीं तो क्या याद आवेगा? बेहद के सारी दुनिया से ममत्व मिटा देना है। जो भी आते हैं उनको पर्चा देना है नर्कवासी हो या स्वर्ग़वासी? स्वर्गवासी बाप बनाते हैं। रावण नर्कवासी बनाती है। अभी बाप भक्ति के फल देने आये हैं। शान्तिधाम–सुखधाम का वर्सा देंगे। हमारा कुल ऊँच ते ऊँच है। चोटी के ऊपर है बाप। यह भी तुमको निमंत्रण आवेगा। सभी धर्मों का संगठन होगा। तुम ब्राह्मण धर्म ब(त)ावेंगे हम ऊँच ते ऊँच चोटी के हैं। बाप सभी को कहते हैं मामेकं याद करो। देह के धर्म को , अपन को आत्मा समझो। शान्ति का राज्य बाप स्थापन करते हैं। जितनी आत्मा पवित्र होगी, याद में होगी उतनी ही पावर से सुनावेगी। यह है भ(ा)रत का प्राचीन योग। निराकार बाप ही सिखलाते हैं। भगवानुवाच है ना। शान्ति का राय गीता में है। सद्गति दाता लिबरेटर गाइड वह बाप ही है। समझाने वाली बड़ी बहादुर चाहिए। बोलो, विश्व में शान्ति चाहते हो ना। इनके राज्य में विश्व में शान्ति थी। यह विश्व के मालिक थे तो ज़रूर संगमयुग पर ही होंगे। आत्मा पवित्र, बाप को याद करने से बनती है। अभी शान्ति की दुनिया स्थापन हो रही है। बाकी तुम तो फां–2 मार रहे हो। ओमशान्ति।